317

(51)

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा
लाल-किला, दिल्ली से दिया गया भाषण

दिनांक:- १५-८-१९७२
अवधि:-
टेप संख्या:-

1183

बहनों और भाइयों,

२५ वर्ष हुए इस किले पे हमारा प्यारा तिरंगा झण्डा पहले दफे फहराया गया । उस दिन हम और आप और सारा देश एक नये जीवन में जागा और कल रात को हमने उन हज़ारों लाखों व्यक्तियों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की जिन की सेवा और त्याग के कारण हम आज स्वतन्त्र हैं । उस में भिन्न भिन्न प्रकार के लोग थे । कोई हिंसा में मानता था, अधिकांश हमारे अहिंसा के, असहयोग आन्दोलन के, सैनिक बने । लेकिन इन सब की कुर्बानी थी जिस ने इस देश में आज़ादी की आग जलाई, जिसके सामने बड़ी से बड़ी ताकत बच न सकी । आज चाहे वो बहादुर थे जो जुलूसों में जाते थे, सभाएं करते थे, जेल भरते थे, गोली खाते थे, या लाठी से मारे जाते थे । बहुत से हमारे साथ नहीं हैं, कुछ थोड़े से आज यहां पे आये हैं । जो नहीं हैं उन को हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । जो हैं उनको फिर से मेरे दिल से हम धन्यवाद देते हैं । और उनको भी याद करते हैं (तालियां) जिन्होंने हमारा रस्ता नहीं लिया, लेकिन तब भी उतनी ही श्रद्धा, हिम्मत, देश प्रेम से आज़ादी के लिए वो भी लड़े । चाहे वो गढ़वाल रेजीमेंट के हमारे भाई थे, चाहे बम्बई में नवसेना के हमारे भाई थे, चाहे बहुत से लोग नाम में किस का लूं, एक का लेते हैं तो बहुत से छूट जाते हैं । लेकिन आप सब जानते हैं कि वो बहादुर नौजवान जो फांसी पे चढ़े । आप जानते हैं, वो बहादुर जिन में से कुछ इसी लाल किले में बंद थे, हमारे आज़ाद हिन्द फौज के भाई और बहन । इन सभों के हम आभारी हैं और इन सभों ने आज हम को यह मौका दिया कि हम यहां खड़े हो के यह आभार प्रकट कर सकते हैं ।

----२

यह जो झण्डा फहराया गया २५ साल हुए,वो एक अन्त नहीं था, लड़ाई का अन्त नहीं था, लेकिन एक शुरुआत थी, एक नई लड़ाई की शुरुआत की और उस लड़ाई में हम और आप सभी सिपाही हैं। वो लड़ाई है कि वो आज़ादी जो जीती गई थी, कैसे उस को अपनी जनता के लिए असलियत बनायें, कैसे उस में उस शब्द को, स्वतन्त्रता के शब्द को एक नई माने हम दें, जिसमें वो घर घर जा के एक नया जीवन हमारी जनता को दिखाये। जहां आज हम अब पुरानी बातें याद करते हैं वहां पे उसी तरह से दूसरे आज के लोग आंखों के सामने आते हैं, आज के गरीब, जिन के लिए हमको लड़ना है, काम करना है, मेहनत करनी है। आज के बच्चे जिन की चमकती आखें, जिन के सुन्दर चेहरे हमें दिखलाई देते हैं और जिन के लिए हमको नए मौके ढूंढने हैं, आज के नौजवान इनके लिए नई नौकरियां ढूंढनी हैं जिससे वो भी अपने देश की वैसी ही सेवा कर सकें और हमारे भारत की नई कहानी को एक नया मोड़ दे सकें। इस २५ वर्षों में एक लम्बा सफर हमने तय किया, दु:ख और सुख का, कठिनाई का। लेकिन साथ साथ आपको मालूम है कि आज भारत पहले से बहुत ज्यादा मज़बूत है। हमारा लोकतन्त्र मज़बूत है, हमारा दृढ़ संकल्प मज़बूत है, हमारी एकता मज़बूत है, और आगे बढ़ने की शक्ति हमारी पहले से बहुत ज्यादा है। तो जहां हम पीछे देखते हैं, वहां हमको आगे भी देखना है, और देखना है कि कैसे अपनी रफ़्तार को, अपनी गति को, हम और तेज करें जिससें यह पुराने वादे पूरे हों। कई वादे पूरे हो चुके हैं। मुझे दु:ख है कि कुछ लोग हमारे देश में हैं जो आज भी कहते हैं कि भारत को क्या मिला। यह भी कोई कहते हैं कि यह स्वतन्त्रता को मनाया क्यों जा रहा है। यह अजब बात है जो मेरे तो समझ में नहीं आती, या वो देख नहीं सकते, या देखना चाहते नहीं हैं, या उनको बुद्धि, बुरा बुरा लगता है कि भारत आगे आ रहा है (तालियां) भारत में आज एक महानशक्ति है, और हम सब जो भारत के निवासी हैं हैं उस शक्ति को हमें अपनी शक्ति से बढ़ाना है, अपने बल से हमें बढ़ाना है, और आज मैं चाहती हूं कि आप सब जो यहां बैठे हैं, और जो भारत की करोड़ों जनता मेरी आवाज़ शायद रेडियो द्वारा सुन रही है, और चाहे नहीं भी सुन रही है, लेकिन आज का दिन है जब हम सब को एक हो के खड़े रहना है। आज का

दिन है जब हमको अपने दिल टटोलने हैं, अपने दिमाग टटोलने हैं, और निर्णय करना है कि इस भारत को हम कैसा बनाना चाहते हैं ।

हमने इन वर्षों में एक मज़बूत बुनियाद देश की बनाई । खेती में क्या उन्नति हुई है आप सब जानते हैं। अगर इस साल कुछ थोड़ी सी हमें कठिनाई पैदा हुई, अगर दूर जगह जहां अनाज पहुंचाना था वहां समय पे नहीं पहुंच सका, इसके माने नहीं है कि वो तरक्की नहीं हुई । बहुत सी गलतियां पहले हुई हैं। शायद गलती आज भी हो रही है, शायद गलती कितनी हम कोशिश करें, लेकिन कल भी हों, लेकिन इन गलतियों से, उन कमियों से जो कामयाबी है, जो सफलता है वो मिट नहीं सकती, और हम सब को खुली आंख से देखना है कि हमें सफलता बहुत से क्षेत्रों में प्राप्त हुई है । जैसे मैंने कहा कि सूखा पड़ा इस साल और सभी साल कहीं न कहीं पड़ता है । बाढ़ आया इस साल और कहीं न कहीं बाढ़ हर साल आता है, लेकिन दूसरे सालों में, और हर एक साल में अन्तर क्या होता है, यह है कि आप अगर देहात की हालत जानें तो पहले जब सूखा पड़ता था तो मदद बाहर से कोई नहीं आती थी । अब जब सूखा पड़ता है तो तुरन्त शहर, देहात, राज्य सरकार, केन्द्र सरकार, दूसरे लोग, सब एक हो जाते हैं उस कठिनाई को दूर करने में, और हमारी यही आशा है, यही प्रयत्न है, कि जहां भी देश में किसी को कठिनाई हो, कठिनाई को हम रोक नहीं सकते हैं, दु:ख को हम रोक नहीं सकते हैं, लेकिन हमारी कोशिश है कि जहां भी ऐसे कष्ट आयें, वहां पे देश एक हो जाये उस कष्ट को मिटाने के लिए, और आस्ते आस्ते यह ताकत भी काम की, यह दूसरों की सहायता करने की, हमारी बढ़ रही है ।

संग संग जैसे हम मदद को जाते हैं हम यह भी कह सकते हैं कि जो व्यक्ति है वो अपनी मदद भी ज्यादा करने लगे हैं । पहले लोग सोचते थे कि कोई न कोई यह दुर्घटना हो गई है, अब हम क्या कर सकते हैं, हम तो कुछ नहीं कर सकते हैं, लाचार हैं । आज वो आवाज़ कम जगह सुनी जाती है । आस्ते आस्ते यह आत्मविश्वास बढ़ा है कि हम चाहे छोटे से व्यक्ति हों, हम भी कुछ कर सकते हैं अपने जीवन को बदलने में, संकट के ऊपर हावी होने में । तो देश की सब से बड़ी

ताकत यही होती है । जैसे खेती के काम में उन्नति हुई आपको मालूम है कि उद्योगिक क्रान्ति भी यहां जोरों से बढ़ी है। क्या हालत थी २५ साल हुए? किस गिरीहुई हालत में हम थे? हमें खुशी थी कि हम स्वतन्त्र थे, लेकिन संग संग एक अंधेरा दिल में था कि इतना बड़ा प्रश्न है, इतनी महान समस्याएं हैं, कैसे यह दूर होंगी । आपको मालूम है कि बहुत से लोग यह भी कहते थे कि भारत की स्वतन्त्रता तो नए जन्म ली है, लेकिन यह बच ही नहीं सकती । इतना बड़ा देश, इतनी समस्याएं, लेकिन आप ने देखा कि एक एक कर के जटिल से जटिल समस्या ठीक हो गई है, उसका कुछ समाधान ढूंढा गया है । तो इसी तरह से इन वर्षों में उद्योग के क्षेत्र में हर तरह की तरक्की हुई है । कारखाने बढ़े हैं, बिजली बढ़ी है, इस्पात बढ़ा है, बड़े बड़े मशीन जो पहले हम बाहर से लेते थे आज हम बना रहे हैं, और मशीन बानाने की जो मशीनें हैं वो भी हम बना रहे हैं । यह सच है कि यह कोई भी चीज़ हमारे लिए काफी नहीं है, जितनी ज्यादा चीजें बनती हैं, वस्तुएं बनती हैं, जितनी ज्यादा बिजली पैदा हो होती है, उससे कहीं ज्यादा उसकी मांग है । उससे कहीं ज्यादा हमारी जनता बढ़ती है, तो एक तरह की एक मुकाबला हर समय होता है, कितनी मांग है, और कितना हम पूरा कर सकते हैं । हमको मालूम है कि मांगें आज पूरी बहुत सी नहीं हुई हैं, लेकिन इस वजह से कहना कि तरक्की नहीं हुई है तो यह सच नहीं होगा, और न यह तरीका है इस तरक्की को और बढ़ाने का, क्यों कि यह निराशा का रास्ता है, यह आशा का और हिम्मत का रास्ता नहीं है । और जो लोग कहते हैं कि उन्नति नहीं हुई है वो भारत की जनता को पहचानते नहीं, वो भारत की जनता के बल का लाभ नहीं उठाना चाहते हैं, भारत की जनता की मेहनत का लाभ उठाना नहीं चाहते ।

यह सब काम हमने किये लेकिन आपको मालूम है कि इस देश पे पांच बार आक्रमण भी हुआ, और यह समय है जब अपनी बहादुर सेनाओं का, नव सेना का, वायुसेना का, सब को मैं आपकी तरफ से, भारत सरकार की तरफ से, देश की सारी जनता की तरफ से अपना

आभार प्रकट करना चाहती हूं (तालियां) इन बहादुरों ने हमारी इस देश की स्वतन्त्रता की, इस देश की सीमा की रक्षा की और उनके परिवारों के लिए हमारे दिल में सहानुभूति है । हमें मालूम है कि भारत की आज़ादी उनके हाथों में हमेशा सुरक्षित रहेगी । लेकिन यह भी हैं, चाहें सेना के सिपाही हों, लेकिन वह भारत के बेटे हैं । और उनके सामने भी, उनके परिवार के सामने भी, वही सुख और दु:ख हैं जो आपके हमारे हैं । तो हम सब को भारत की सेनाओं को, भारत की पुलिस को, भारत के जितने वर्ग हैं उन सभों को मिल के, इस देश को ऊंचा उठाना है । हम को मालूम है कि कितनी ही मज़बूत और बहादुर फौजें हों, लेकिन देश की ताकत केवल फौज के बल नहीं बनती है । देश की ताकत बनती है उसकी आर्थिक उन्नति के बल पे, उसकी विचारधारा से, कैसी है, उसकी जनता में कितनी एकता , कितनी बहादुरी है, उसकी जनता कितना त्याग करने को तैयार है । क्यों कि आजकल के जमाने में हमारे सामने यह प्रश्न नहीं है कि हम आगे बढ़ें या न बढ़ें । यह प्रश्न नहीं है कि हम मेहनत करें या आराम करें, रास्ता तो एक ही है, झगड़ा तो एक ही है । झगड़ा या तनाव हमेशा दुनियां में रहता है ।प्रश्न यह है कि किस प्रकार के झगड़े में हम पड़ना चाहते हैं। क्या हम व्यक्तिगत झगड़ों में पड़ना चाहते हैं, छोटी बातों में पड़ना चाहते हैं। क्या हम फिजूल के आन्दोलन करना चाहते हैं, जिसमें जनता की शक्ति, सरकार की शक्ति, इन छोटी बातों में पड़े। या हम चाहते हैं कि हम भविष्य को देखें और हम निर्णय करें कि कैसा भविष्य हम चाहते हैं, कैसी जनता चाहते हैं, कैसे मौके अपने नौजवानों और अपने बच्चों को देना चाहते हैं । और आज दूसरे दिनों से क्या फर्क है? यह फर्क है कि यह जो बेचैनी नौजवानों में के या दूसरों के दिलों में है, यह कोई भारत में केवल नहीं है । सारी दुनियां में प्रत्येक देश में है । किस लिए है? हमारे यहां हो सकता है कि बेकारी है, हो सकता है कि गरीबी है इस कारण, लेकिन दूसरे देशों में जहां गरीबी और बेकारी नहीं है वहां भी क्यों है। इसलिए कि इस समय हम एक युग से निकल के और यह दुनियां दूसरे युग में प्रवेश कर रही है, और आपको मालूम है कि इतना बड़ा उथल-पुथल जब होता है तो बेचैनी होनी जरूरी है, परेशानी होनी जरूरी है,

कष्ट होना ज़रूरी है । हम सब चाहें यह नहीं कि हम पुरानी दुनियां को पकड़ के बैठें, हम कहें कि परिवर्तन नहीं होगा । हम सब चाहें कि परिवर्तन कैसा आयेगा उससे हमारा भी कुछ उसको बनाने में हमारा भीकुछ हाथ हो । और यह परिवर्तन बहुत तरह के हैं । क्योंकि यहां पे गरीबी है तो आवश्यक है कि गरीबी हटाने के कार्यक्रम और जोरों से चलें । आवश्यक है कि ऐसी स्थिति पैदा करें कि जो चीजें हमारे हाथ के बाहर हैं, चाहे सूखा हो, चाहे कुछ बाढ़ हो, चाहे कुछ और हो, कि वह दुर्घटनाएं तो आयेंगी, लेकिन उनका सामना करने के लिए हमारी समाज और मज़बूत हो, बहुत कुछ यह काम हुआ है, और जोरों से करना है । यह तो हुई है। अगर बेकारी है तो जल्दी से जल्दी उसको दूर करने के कार्यक्रम करने हैं । यहां इस समय वह सब कार्यक्रम क्या हैं, मैं आपको बताना तो चाहती थी, लेकिन समय की कमी से इन सब बातों में जाना मुश्किल है। लेकिन हमारी पार्लियामेंट में और अनेक दूसरी जगह यह कार्यक्रम जनता के सामने रखे जाते हैं । बहुत से हाथ में लिये हैं, बहुत कुछ और आगे करना है । कुछ कार्यक्रम हैं जो अभी की स्थिति के लिए हैं, और बहुत से हैं जो भविष्य के हैं । एक एक को हम पूरा कर के, एक एक कदम अपनी लम्बी यात्रा पर आगे बढ़ रहे हैं । लेकिन केवल अगर हम इन प्रश्नों की तरफ देखें तो हम भविष्य को बनाने में सफल नहीं होंगे । तो भविष्य को जैसे आना है किसी न किसी तरह से आ जायेगा । लेकिन यह एक भारतवर्ष जिसका इतना सुन्दर इतिहास रहा है, उसके लिए यह काफी नहीं है । इस वक्त कैसा भविष्य बनेगा, हमचाहते हैं कि प्रत्येक भारतीय का उस में हाथ रहे । हम आज़ाद हैं, २५ साल से, लेकिन जैसे मैंने कहा कि, जैसी आज़ादी हमको चाहिए, वो आज़ादी हमको नहीं मिली है । वो आज़ादी होगी जब प्रत्येक व्यक्ति, स्त्री, पुरुष और बालक के मन की आज़ादी भी हो, आर्थिक आज़ादी हो, सामाजिक आज़ादी हो, और उसका मन में डर न हो, भ्रम न हो, रूढ़ियों से, वो उसमें अटकावे न आयें । ऐसी हमको भारत की समाज बनानी है । ऐसी हमको दुनियां की समाज बनानी है । आज हम नहीं कह सकते कि दुनियां में जो हो सो हो, हम

----७

भारत अलग हैं । हम नहीं हैं । इस दुनियां के हम एक कोने से, या बड़े से, हम एक भाग हैं, और हम किसी की ज़मीन नहीं चाहते, किसी दूसरे देश में दखल नहीं देना चाहते, जैसे वो अपनी सरकार बनायें अपना रास्ता पकड़ें, यह उनके हाथ में है, लेकिन हम अपने जीवन से दिखा सकते हैं कि ठीक रास्ता यह है । मैं समझता हूं कि पिछले दिनों में, पिछले महीनों में, हमने कुछ दिखाया है । एक मैंने यहां पांच आक्रमण की बात की । आप सब को मालूम है कि आखिरी आक्रमण तो पिछले साल हुआ, और उसी में हमारी सेनाओं ने, हमारी जनता ने, इतनी बहादुरी और एकता, और दानिशमंदी दिखाई कि भारत की बड़ी सफलता हुई । लेकिन सच्ची सफलता हम और आपको मालूम है, वह विचारधारा की सफलता है कि दुनियां ने देखा कि भारत लोकतन्त्र के द्वारा क्या कर सकता है । भारत की चाहे आर्थिक नीति हो, चाहे सामाजिक नीति हो, उसने भारत को यह ताकत दी है, यह एकता दी है । उसने भारत की जनता में यह उत्साह पैदा किया है, कि किसी भी कष्ट का सामना कर सके, किसी भी खतरे का सामना कर सके । तो हमने किसी पे हमला नहीं किया, किसी पर ज़ोर डालने की कोशिश नहीं की, दूसरों ने हमपे ज़ोर डालने की कोशिश की, लेकिन हमको और आपको मालूम है कि उस ज़माने के बहुत दिन हुए हम बीत गए जब किसी के ज़ोर से हम दबें । तो हमने यह एक रास्ता दुनियां को दिखाया, और मैं समझता हूं कि लोग चाहे थोड़े से हमारी निन्दा करें, लेकिन हमारी सफलता को देख कर दुनियां पर असर जरूर हुआ है । और इसी तरह से आगे भविष्य में भी हम जहां हमको हवा धकेले, जहां हमको धारा धकेले, धकेले, वहां हम धकेलते न जायें, लेकिन आंख खोल के समझ के हम उस रास्ते को बनायें । जब आपको मालूम है कि यह बना बनाया रास्ता नहीं है । एक एक कदम को हमको बनाना है, और उस में इसीलिए भूल होती है, इसीलिए कमी सुस्त हो जाते हैं, इसीलिए कष्ट बढ़ता है । लेकिन देश का चरित्र जैसे कि व्यक्ति का चरित्र, कोशिश से, मेहनत से, नहीं विचारधारा से बनता है, आराम के जीवन से नहीं बनता है । चाहे कुछ लोग खुश हों कि उनके आराम के जीवन में, बड़ी बड़ी कोठियां हैं, अच्छी नौकरियां

हैं, लेकिन उनका चरित्र उनकी शक्ति वो नहीं होतीहै, जो आदमी मेहनत से, अपनी कोशिश से कर सकता है । हम को यह देश एक आरामतलबी देश नहीं चाहिए । और हम कहते हैं कि हमारी आर्थिक लड़ाई है तो ऐसे जीवन के लिए नहीं कि सब लोग बिना काम करें बैठें, लेकिन ऐसे जीवन के लिएकि काम करने से पेट भर के खाना मिले, + ऐसे जीवन से जो काम करने से सिर पर छत मिले, ऐसे जीवन से ~~कि~~ जो हमारे काम से हम अपने बच्चों को नए और अच्छे मौके दे सकें, ऐसे जीवनसेकि जो हम सब मिल के मेहनत करें, कोई काम छोटा नहीं समझें, कोई काम नीचा या बुरा न समझें । हम, मैं मानती हूं कि भारत की आज़ादी तब पूरी होगी जब ऐसे मौके हम अपनी जनता को दे सकें । मैं मानती हूं कि भारत की आज़ादी पूरी नहीं होगी जब तक यह जातिवाद को हम अपने समाज से हटायेंनहीं, जब तक कोई भी हमारी समाज में न हो या अपनी ताई को नीचा समझे, या दूसरे उस को नीचा समझें । हम सब हैं इन्सान, हम सब हैं भारतीय, हम सब एक अद्भुत चीज़ हैं, भारत के नागरिक, स्वतन्त्र भारत के नागरिक । एक प्राचीन देश जिसने दुनियां को एक विशेष सांस्कृति दीहै, ऊंचे आदर्श दिये हैं । अब हमको दुनियां को दिखाना है कि हम उस संस्कृति को समझते हैं, कोई किताब में लिखी हुई चीज़ नहीं है, कोई थोड़े से श्लोक नहीं हैं, यह एक चीज़ है जो प्रत्येक भारत नागरिक के दिल और दिमागमें आना चाहिए । चाहे कोई भी हमारा धर्म हो, और भारत में बहुत से धर्म हैं, प्रत्येक अपने धर्म का सच्चा पालन करें, तब जा के भारत मज़बूत होगा, और किसी भी धर्म में यह नहीं है कि दूसरा धर्म खराब है, या दूसरे धर्म के लोगोंसे लड़ाई करनी चाहिए या नीचा दबाना चाहिए । यह रही है भारत की परम्परा । आज हमको देखना है कि यही परम्परा हम दुनियां के मानव जाति में फैला सकें और, दुनियामें एक परम्परा में जिस में एक नई शक्ति इसमें हम डालसकें, नई प्रतिष्ठा हम इसमें डाल सकें ।

तो जो काम हमारा है वो आज का काम है, कल का

काम है, लेकिन आज से हमको देखना है कि सदियों आगे भारत और यह विश्व कैसा बनेगा, और इस में मैं आप सब का साथ चाहती हूं, चाहे आप बूढ़े हों, और मैंने पहले ही स्वागत किया हमारे बहुत से बूढ़े आज़ादी के आन्दोलन के, क्रान्तिकारी, और दूसरे भाई और बहन यहां मौजूद हैं, उन से हम प्रेरणा चाहते हैं, उनके आशीर्वाद चाहते हैं, व्यक्ति के लिए नहीं, लेकिन इस भारत वर्ष के लिए । और आजकल की जो पीढ़ा है युवा पीढ़ी उन को हम सुबह शुभकामनाएं देते हैं कि वो प्रत्येक व्यक्ति अपनी ताई को सिपाही समझे और आज से देखे कि किस तरह से चाहे कुर्बानी होना, हो, चाहे खून बहाना हो, और चाहे पसीना बहाना हो, चाहे कोई कष्ट का सामना करना हो, हम इस भारत को एक सुन्दर भारत, एक साफ भारत, एक प्रगतिशील भारत, एक चमकता भारत हम बनायेंगे । यह आज हम सब को प्रतिज्ञा करनी है । भारत की प्रभुसत्ता, भारत की मज़बूती, भारत की एकता, यह सब आप के हाथों में है । प्रत्येक भारतीय एक निशान है, भारत कैसा देश है, यह कहना कि हमारे थोड़े से इन्जीनियर बहुत आगे बढ़े हैं, अणु-बम्ब, अणु-शक्ति का काम हम कर रहे हैं, हमें खुशी होती है कि हमें यह जानकारी है और हम यह काम कर सकते हैं, लेकिन असल खुशी होगी जब प्रत्येक भारतीय इन चीजों को समझे और भारत का भविष्य अपने हाथ में ले और उसकी सुरक्षा हर तरह से करे, खाली बाहरी आक्रमण से नहीं, खाली समाज की बुराइयां हैं उनसे नहीं लेकिन इस भारत को आगे ले जाने में । एक रस्ता जो अभी मुझे मालूम नहीं है, मैं बता भी नहीं सकती । लेकिन मुझे मालूम है कि कोई न कोई भावना है कि जो तड़प रही है बाहर ~~कि~~ निकलने को, सारी मनुष्य जाति में, जिसमें आज जो मनुष्य की जानकारी है, जो मनुष्य जाति की शक्ति है, उससे एक बिल्कुल नया रास्ता निकले, लड़ाई झगड़े का, नीचपन का झगड़ा नहीं, एक बहुत सुन्दर सा रास्ता, जिसमें सारी दुनियां के लोग मिल के रह सकें, एक दूसरे का साथ दें, सहयोग दें, मदद करें । हर तरह से इस दुनियां को एक परिवार बनाने के लिए, यह आज हम सब को प्रतिज्ञा करनी है । गरीबी हटानी है, केवल आर्थिक गरीबी नहीं, लेकिन विचारधारा की गरीबी भी, एक नई विचारधारा

हम को लानी है और मुझे मालूम है कि आजकल के नौजवान कभी चाहे गलती करें, कभी जोश में इधर उधर बहक जायें, लेकिन मुझे मालूम है कि वो शक्ति है उनमें अगर करना चाहते हैं । यह समय है कि हम जो भी हमारी ताकत है, जो भी शक्ति है, जो भी गुण हैं, उन सब को इस भारतवर्ष को मज़बूत बनाने में, शक्तिशाली बनाने में, हम उस ताकत को बाहर लायें, दुनियां के सारे मनुष्य जाति को एक नया रास्ता दिखाने में, खाली यहां के लोग नहीं, सारी दुनियां के सब देशों के लोग मिल के यह नया रास्ता दिखायें । आप पूछेंगे कि हमारे साथ कौन है । भारत के बहुत से मित्र हैं, और हमारी नीति सदा रही है उस मित्रता को पक्की करने के लिए । अभी हाल में आपको मालूम है हमने कोशिश की कि हमारे पड़ोसी देश से भी कुछ समझौता हो । लोग पूछते हैं कि आपको भरोसा है कि नहीं । मेरा जवाब है कि हमको भरोसा केवल एक देश पर रखना है और वो भारतवर्ष है, भरोसा अपनी जनता पर रखना है, अपनी ताकत पे रखना है, दूसरे के भरोसे के आधार पर कोई देश नहीं आगे बढ़ सकता है (तालियां)

तो हमारी तो आशा है कि यहां पे सुलह रहे, शांति रहे, और हम आगे बढ़ सकें तेजी से । लेकिन अगर आप पूछते हैं कि हमारे साथ कौन है तो मैं कहूंगी भाइयों, बहनों और बच्चों, हिम्मत है हमारे साथ, दृढ़ता है हमारे साथ, एकता है हमारे साथ (तालियां) और जब ऐसे साथी हैं तो कोई हमारे रास्ते में नहीं रह सकता है ।

आप सब को इस शुभअवसर पर मैं शुभकामनाएं देती हूं शुभकामनाएं आराम के लिए नहीं, चैन के लिए नहीं, मेहनत के लिए, और अगर हम मिल के मेहनत करेंगे तो अगले साल तक बहुत कुछ और भी हम कर सकेंगे, और हर साल ऐसे आगे बढ़ते चले जायेंगे । अब बहुत से बच्चे यहां जमा हैं, कुछ हमारे शहर के,

और बहुत दूसरे शहरों से भी यहां पे आये हैं। उन सब का मैं स्वागत करती हूं, क्यों कि यह नई दुनियां उनकी होगी। वो बनाने में मदद करेंगे और उस दुनियां में रह के उसको और भी सुन्दर दुनियां बनाने की कोशिश करेंगे। इस समय हम उनकी सुन्दर आवाज़ सुनना चाहते हैं। मैं पहले तीन बार मैं जय हिन्द कहूंगी और उसके बाद बच्चे कहेंगे। बच्चे नहीं सब लोग आप। कुछ बातों में सभी को बच्चे होना चाहिए, उत्साह में, मिल के कैसे खेलते हैं, सब वर्ग, सब जाति के बच्चे वो बड़े ~~और~~ अगर सीखें तो उससे कुछ लाभ हो ~~सकता है~~।

जय हिन्द - जय हिन्द, जय हिन्द - जय हिन्द
जय हिन्द, जय हिन्द !!

-:-:-:-:-:-

अ०रस्तोगी